मृण्मय वृषभ

आलेखः राजेन्द्र यादव

© भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, 2002

मुद्रक : कांन्ति ऑफसेट प्रिन्टर्स, जयपुर फोन : 2317110

कालीबंगा

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
जयपुर मण्डल,
जयपुर

सांड की कृत्रिम आकृति

सिन्धु घाटी सभ्यता, जिसे अब हड़प्पा सभ्यता के नाम से जाना जाता है, विश्व की चार प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है । यह सभ्यता तीसरी सहस्राब्दी ई.पू. (2500-2000) में सिन्धु, सरस्वती एवं उनकी सहायक नदियों की घाटी में विकसित एवं फली-फूली थी । अपनी कुछ प्रमुख विशेषताओं के कारण यह सभ्यता अन्य समकालीन सभ्यताओं से भिन्न है । सुनियोजित नगर प्रबन्धन, सुदृढ़ सुरक्षा-प्राचीर, विकसित जल निकास व्यवस्था, दीर्घकालीन जल-संग्रहण एवं संवर्धन की व्यवस्था, लिपि, मुद्रा, बाट व माप एवं विशेष प्रकार के मिट्टी के पात्र हड़प्पा सभ्यता को अन्य संस्कृतियों से अलग पहचान देते हैं । सन् 1947 में देश विभाजन के समय अधिकांश हड़प्पा कालीन पुरास्थल पाकिस्तानी भू-भाग में चले गये थे जिससे भारत इस महान सभ्यता की समृद्ध धरोहर से वंचित हो गया था । ऐसे समय में भारतीय पुरातिदों ने अपने अथक प्रयासों से इस कमी को पूरा ही नहीं किया अपितु अनेक अज्ञात पक्षों को उजागर कर इस सभ्यता की खोज में नये आयाम जोड़कर अधिक समृद्ध करने में सहयोग दिया। वर्ष 1950 से 1952 के मध्य प्रख्यात पुरातिद् अमलानन्द घोष ने राजस्थान, पंजाब एवं हरियाणा में विस्तृत पुरातात्विक सर्वेक्षण कर 20 से अधिक हड़प्पा कालीन पुरास्थलों की खोज की । तदुपरान्त सर्वेक्षण की यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रही जिसके परिणामस्वरूप आज भारत में सैकड़ों हड़प्पा कालीन स्थल प्रकाश में आये हैं । हरियाणा में राखीगढ़ी एवं गुजरात में धौलावीरा के बाद राजस्थान में कालीबंगा देश का तीसरा सबसे बड़ा हड़प्पा कालीन पुरास्थल है ।

कालीबंगा प्राचीन सरस्वती नदी के बांए तट पर, जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ से लगभग 25 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है । यह नदी आज पूर्ण रूप से रेतीले मैदानों में विलुप्त हो चुकी है तथापि यत्र-तत्र इस नदी के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। यह पुरास्थल वर्तमान कालीबंगा गाँव से 500 मीटर पूर्व में स्थित है तथा सड़क एवं रेल मार्ग द्वारा देश के अन्य भागों से जुड़ा है । कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ है काले रंग की चूड़ियां स्थानीय भाषा में चूड़ियों को बंगा कहा जाता है। इस पुरास्थल के ऊपरी सतह पर काले रंग की चूड़ियाँ मिलने के कारण इसका नाम कालीबंगा पड़ा ।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने वर्ष 1961 से 1969 तक इस पुरास्थल का वैज्ञानिक विधि द्वारा उत्खनन कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप पुरातिदों ने कालीबंगा के हड़प्पा कालीन शहर को कालक्रम के आधार पर दो चरणों, प्रथम प्राक्-हड़प्पा या हड़प्पा-पूर्व एवं द्वितीय चरण विकसित हड़प्पा काल में विभाजित किया है ।

उत्खनन से प्राक्-हड़प्पा चरण का 1.6 मीटर मोटा सांस्कृतिक जमाव प्राप्त हुआ है । इस काल के लोगों ने समचतुर्भुजाकार रक्षा-प्राचीर के अन्दर अपने आवासों का निर्माण किया है। जिसकी लम्बाई उत्तर-दक्षिण में 250 मीटर तथा पूर्व से पश्चिम में 180 मीटर है। इसका निर्माण कच्ची मिट्टी की ईंटों (30 X 20X10 सेमी.) से किया गया है । इस सुरक्षा दीवार को दो चरणों में बनाने के प्रमाण मिले हैं। प्रारम्भ में यह दीवार 1.9 मीटर चौड़ी थी जिसे बाद में 3-4 मीटर तक चौड़ा किया गया । रक्षा-प्राचीर के अन्दर-बाहर दोनों ओर से मिट्टी का लेप किया गया है। इस काल में आबादी अपेक्षाकृत छोटी रक्षा-प्राचीर के अन्दर तक सीमित थी । ये लोग कच्ची ईंटों से बने मकानों में रहते थे । भवनों के निर्माण में रक्षा-प्राचीर के समान ही समानुपातिक आकार 4:2:1 (30 X 20 X 10 सेमी.) की ईंटों का प्रयोग किया गया है । मकानों की नालियां, शौचालय, भट्टियों एवं कुछ संरचनाओं में पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है । उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर पता चलता है कि इस काल में मकानों को पांच उपचरणों में विभाजित किया गया था ।

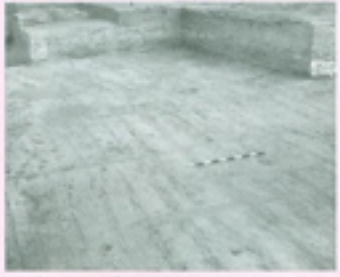

हल से जुता हुआ खेत

प्रथम चरण के लोग एक विशेष प्रकार की पात्र-परम्परा का प्रयोग करते थे । इस प्रकार के पात्र सर्वप्रथम राजस्थान में सोथी नामक पुरास्थल से प्राप्त हुए हैं जिसके नाम पर इन्हें सोथी मृद्भाण्ड परम्परा नाम दिया गया । कालीबंगा से प्राप्त प्राक्-हड़प्पा कालीन मृद्भाण्ड को उनके गठन, बनावट तथा मुख्यतः उनके रंग के आधार पर छः उप भागों में विभाजित किया गया है । इस चरण के मुख्य

पात्र-प्रकारों में विभिन्न आकार के घड़े, तश्तरियां, लघु पात्र एवं कटोरे प्रमुख हैं । इनके बाहरी भाग को लेप द्वारा एवं खरोंच कर अलंकृत किया गया है । अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्यामितीय,पशु-पक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है ।

प्राक्-हड़प्पा काल से प्राप्त प्रमुख पुरावशेषों में चकमक पत्थर एवं कालसेडोनी के ब्लेड, सेलखड़ी, शंख, फियांस, कार्नेलियन एवं मिट्टी के मनके, मिट्टी की खिलौना गाड़ियां, वृषभ आकृतियां, पत्थर के सिल एवं लोढ़े, हड्डी के नुकीले औजार और तांबे से निर्मित परशु एवं अन्य उपकरण प्राप्त हुए हैं । इस काल की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि हल से जुता हुआ खेत है जिसमें समकोण पर काटती हुई हल की नालियों के निशान मिले हैं । कालीबंगा से प्राप्त हल से जुता हुआ यह खेत भारत ही नहीं अपितु विश्व की अन्य समकालीन सभ्यताओं के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों में अकेला उदाहरण है । यह खेत

यज्ञ-वेदी

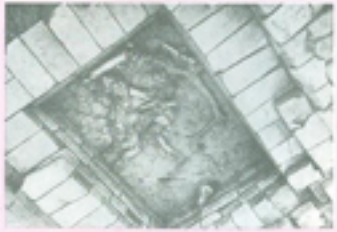

रक्षा-प्राचीर के बाहर पूर्वी-दक्षिण भाग में मिला है । पूर्व से पश्चिम को जाती हुई नालियों के मध्य 30 सेमी. तथा उत्तर-दक्षिण दिशा में खुदी हुई नालियों के मध्य 190 सेमी. का अन्तर है । खेत जोतने की यह पद्धति राजस्थान में आज भी प्रचलित है। कालीबंगा में

सेलखड़ी की मुद्रा

प्राक्-हड़प्पा संस्कृति 2450-2300 ईसा पूर्व तक फली-फूली विद्वानों के मतानुसार इस प्राक्-सभ्यता का अन्त भूकम्प के कारण हुआ जो कि आज भी विवादास्पद है ।

लम्बे समय तक वीरान पड़े रहने के बाद कालीबंगा का यह स्थल पुनः विकसित हड़प्पा संस्कृति के लोगों द्वारा आबाद हुआ । यह काल कालीबंगा का उन्नति का काल था। इस काल में व्यवस्थित भवन निर्माण एवं उन्नत नगर-नियोजन मिलता है । हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने प्राक्-हड़प्पा कालीन अवशेषों पर अपना, विशिष्ट लोगों के निवास हेतु मुख्य प्रासाद तथा साधारण जनता के लिए अलग, निम्न प्रासाद का निर्माण किया जो एक दूसरे से 40 मीटर चौड़े मार्ग द्वारा विभाजित था । इस चरण में निर्मित मुख्य प्रासाद आकार में समचतुर्भुजाकार है जिसकी उत्तर-दक्षिण भुजा 240 मीटर एवं पूर्व-पश्चिम की भुजा 120 मीटर लम्बी है । मुख्य प्रासाद को घेरती हुई 3-7 मीटर मोटी रक्षा-प्राचीर बनी है, जिसको एक मोटी दीवार दो भागों में बांटती है। रक्षा-प्राचीर को सुदृढ़ करने के लिए चौकोर बुर्जें बनी हैं। इसके निर्माण में दो आकार की ईंटें (40 X20 X 10 सेमी. और 30 X 15 X 7.5 सेमी.) का प्रयोग किया गया है जिनका अनुपातिक योग 4:2:1 मिलता है ।

प्राचीर के बाहरी एवं अन्दरूनी भाग पर मिट्टी का लेप किया गया है । इस प्रासाद के दक्षिणी भाग को और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए दो और बुर्जें बनी हैं । मुख्य प्रासाद के दक्षिण भाग में कच्ची ईंटों से निर्मित, थोड़े-थोड़े अन्तर पर पाँच-छः विशाल चबूतरे बने मिले हैं । यह चबूतरे सम्भवतः सामुदायिक पूजा के लिए प्रयुक्त होते थे । इनमें से अधिकतर चबूतरों के ऊपरी भाग नष्ट हो चुके हैं परन्तु एक चबूतरे पर चौकोर यज्ञ-वेदी के प्रमाण मिले हैं ।

मृण्मय केक

इसके चारों किनारों को कच्ची ईंटों से बनाया गया है। इस यज्ञ-वेदी में हिरण एवं अन्य पशुओं की हड्डियां मिली हैं जिससे प्रतीत होता है कि इसका उपयोग सामूहिक पूजा एवं यज्ञ

के लिए किया जाता रहा होगा । मुख्य प्रासाद में प्रवेश हेतु उत्तर एंव दक्षिण दिशा में दो द्वार

निम्न प्रासाद की मुख्य सड़क

है जिसका उत्तरी भाग अभिजात्य वर्ग के निवास के लिए प्रयुक्त होता था । इसमें प्रवेश के लिए तीन दिशाओं क्रमशः पूर्व, उत्तर, एंव पश्चिम में तीन द्वार बने हैं । मुख्य प्रासाद की भांति निम्न प्रासाद भी मूल योजना में समानान्तर्चतुर्भुजाकार एंव पूर्व में स्थित है। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम 240 मीटर तथा उत्तर से दक्षिण 360 मीटर है । इस रक्षा-प्राचीर की मोटाई 3.5 से 9 मीटर तक है जिसे 3-4 चरणों में निर्मित किया गया है। इसके निर्माण में मुख्य प्रासाद की भांति 4:2:1 अनुपात (40X20X10 सेमी. एंव 30 X15 X7.5 सेमी.) की ईंटों का उपयोग किया गया है । नगर में प्रवेश के लिए उत्तर एंव पश्चिम दिशा में दो प्रमुख द्वार बने हैं । उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है कि नगर पूर्व-नियोजित तरीके से बसाया गया था । जिसकी प्रमुख सड़कें उत्तर से दक्षिण एंव पूर्व से पश्चिम को समकोण पर काटती हैं । गलियों के दोनों ओर कच्ची ईंटों के मकान बने हैं । कहीं-कहीं पर नालियों, कुओं, स्नानगृह में पक्की ईंटों का भी प्रयोग किया गया है । मकान में सामान्यतः आंगन जिसके दो या तीन ओर कमरे तथा सीढ़ी और प्रवेशद्वार मिले हैं । मकान के अन्दर रसोई एंव नहाने के लिए कमरे मिले हैं जिसका पानी बाहरी सड़क पर गड़े पात्रों में गिरता था । रक्षा-प्राचीर के बाहरी ओर निम्न प्रासाद से 80 मीटर पूर्व में यज्ञ-वेदिया मिली हैं जिनका उपयोग पूजा के लिए किया जाता रहा होगा । कालीबंगा से विकसित हड़प्पा कालीन अवशेषों में अगेट, जैस्पर, क्रिस्टल, कार्नेलियन, सेलखड़ी, सोने, मिट्टी आदि के सुन्दर मनके, खिलौना बैलगाड़ी के पहिए, मिट्टी एंव तांबे की चूड़ियां, कांसे का वृषभ मिट्टी की वृषभ आकृतियां, मुहरें, मुद्रा छापें, मिट्टी के केक, चर्ट एंव अगेट के बाट प्राप्त हुए हैं । चौकोर मुद्राओं के अतिरिक्त यहां से प्राप्त बेलनाकार मुद्रा अपने आप में अनूठी है । इस मुद्रा को देखने से मेसोपोटामिया सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है । यहां से प्राप्त दो तिकोने आकार के पक्की मिट्टी के केक पर सींगयुक्त आकृतियाँ बनी हैं । विद्वानों का मत है कि यह किसी देवता की आकृति है ।

बेलनाकार मुद्रा

हड़प्पा कालीन लोग मिट्टी के बने विशिष्ट प्रकार के बर्तनों का प्रयोग करते थे । इस प्रकार के पात्र सभी हड़प्पा सभ्यता के केन्द्रों से प्राप्त हुए हैं । इस चरण में यदा-कदा प्राक्-हड़प्पा कालीन पात्र-प्रकार भी

मृण्मय चिड़िया

मृण्मय वृषभ

प्रचलन में मिलते हैं कालान्तर में उनका स्थान पूर्णरूप से हड़प्पा कालीन पात्रों ने ले लिया । इस चरण से अंग्रेजी के "एस" आकार के बड़े जार, घड़े, साधार-तश्तरी, साधार-कटोरे, गोबलेट (चषक), थालियां, छिद्रयुक्त-पात्र, लघु-पात्र इत्यादि प्राप्त हुए हैं । सभी पात्र मुख्यतः लाल रंग के हैं जिनके ऊपरी सतह पर काले रंग से सुन्दर चित्रकारी की गयी है। इसके बाह्य भाग पर ज्यामितीय, वनस्पतिक एंव जीव-जन्तुओं को अलंकृत किया गया है । वनस्पतियों में पीपल एंव बबूल की पत्तियों की आकृति का अलंकरण बहुतायत में मिलता है ।

कालीबंगा से अन्य हड़प्पा कालीन नगरों की भांति शवाधान स्थल भी मिला है जो मुख्य प्रासाद से 300 मीटर पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है । प्राप्त अवशेषों के

आधार पर यह ज्ञात होता है कि हड़प्पा काल में मृतक संस्कार की तीन विधियां प्रचलित थीं । प्रथम विधि में मृतक को चौकोर गर्त में लिटाया गया है; द्वितीय विधि में मृतक को घड़े में रखकर गोलाकार गर्त में दबाया गया है तथा तीसरी एंव अन्तिम विधि में शारीरिक अवशेषों के स्थान पर केवल मृद्भाण्ड एंव अन्य शवाधान सामग्री रखी मिली हैं।

कालीबंगा में हड़प्पा संस्कृति लगभग साढ़े पाँच सौ वर्ष 2300 ई.पू. से 1750 ई.पू. तक अनवरत फली-फूली । विद्वानों का मत है कि सरस्वती नदी का प्रवाह विलुप्त होने पर कालीबंगा से हड़प्पा सभ्यता भी धीरे-धीरे विलुप्त हो गई ।

कालीबंगा के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा नवनिर्मित संग्रहालय भवन में प्रदर्शित करने का प्रयास किया जा रहा है । इन पुरावशेषों को छाया एंव रेखाचित्रों तथा प्रतिकृतियों के माध्यम से यहां प्रदर्शित किया जायेगा । कुछ पुरावशेषों को वास्तविक रूप में दिखाने का प्रयास किया जा रहा है । आशा है कि भविष्य में यह संग्रहालय, आम जनता, विद्यार्थियों एंव शोध-छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

सेलखड़ी की मुद्रा